# चक्रवर्ती का वैभव, चौदह रत्न और नवनिधियों का स्वरूप विनिश्चय आगमोदय के परिप्रेक्ष्य में

– *डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़ सागर*
(राष्ट्रपति सम्मानित)
महामंत्री – प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन
संयुक्त मंत्री – अखिल भारतवर्षीय दि. जैन शास्त्रिपरिषद्

---

जैन दर्शन गुणों की पूज्यता स्वीकार करता है। व्यक्ति को महत्व तभी है जब वह गुणवान् हो। यदि उसके भीतर गुण नहीं है तब उसकी पूज्यता नहीं है। जिन्होंने इन्द्रियों को जीत लिया है वह जिनेन्द्र है। जिनेन्द्र व्यक्ति नहीं है, गुण हैं। गुणी कोई भी हो सकता है। जैन दर्शन कहता है गुणवान् को ही पूज्यता प्राप्त होगी। इसलिए तीर्थंकर में जिनके नाम सम्मिलित हैं उन्होंने सवोत्कृष्ट गुणों को प्राप्त किया है। वे वीतरागी-सर्वज्ञ-हितोपदेशी के सवोत्कृष्ट गुणों के धारक हैं। तीर्थंकर का कार्यकाल निश्चत है। अनंतानंत चौबीस हो चुकी है और अनंतानंत चौबीसी होगी। सभी के नाम कोई नहीं जानता है। वर्तमान के नाम ही जानता है। इसलिए जिनशासन कहता है कि चौबीसी में नाम भले रहे न रहे, परंतु जो सिद्धत्व प्राप्त किया है वह सदा रहेगा। वे जिनेन्द्र सदा रहेंगे। वे आत्मसुख लीन सदा रहेंगे।

63 महापुरुष प्रत्येक कल्पकाल में होते हैं। सभी शलाका पुरुष वज्रवृषभनाराच संहनन से सहित, सुवर्ण के समान वर्ण वाले, उत्तम शरीर के धारक, सम्पूर्ण सुलक्षणों से युक्त और समचतुरस्त्र संस्थान से युक्त होते हैं।[1] जिनमें 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवती, 9 बलदेव, 9 नारायण, 9 प्रतिनारायण इन्हें श्लाका पुरुष कहते हैं। इनमें 9 नारद, 11 रूद्र, 24 कामदेव, 24-24 तीर्थंकर के माता-पिता और 14 कुलकर ये सब मिलाने से 169 दिव्य पुरुष होते हैं। उसी भव में या अगले 1-2 भवों में मोक्ष पद प्राप्त करते हैं। तीन लोक में कभी चक्रवर्ती-चक्रवर्तियों का, तीर्थकर तीर्थंकरों का, बलभद्र-बलभद्रों का, नारायण नारायणों का और प्रतिनारायण-प्रतिनारायणों का परस्पर मिलाप नहीं होता।[2]

विशेष बात है कि सभी देव, नारकी, बलदेव, चक्रवर्ती, तीर्थंकर, नारायण प्रतिनारायण और कामदेव मूँछ दाढ़ी से रहित होते हैं।

हुण्डावसर्पिणी काल के कारण 63 श्लाका पुरुष न होकर 58 इलाका पुरुष चतुर्थकाल में हुए। क्योंकि शांतिनाथ, कुंथुनाथ और अरनाथ तीर्थंकर और चक्रवर्ती दोनों पद के धारी थे। इसलिए तीन कम हो गए तथा त्रिपृष्ठ नारायण का जीव तीर्थंकर महावीर हुआ इसलिए 1 कम हो गए और तीर्थंकर

[1] (ति.प., 4/1382)
[2] पांडवपुराण 22.10-11

आदिनाथ का जन्म तीसरे काल में हुआ और तीसरे काल में ही मोक्ष को प्राप्त हो गए इसलिए 1 कम हो गए। इस प्रकार 63-5=58 होते हैं। इस काल में कुछ अनहोनी घटनायें घटती हैं- जैसे-तीसरे काल में कल्पवृक्षों का अंत और कर्मभूमि का व्यापार प्रारम्भ, तीसरे काल में प्रथम चक्रवर्ती और प्रथम तीर्थंकर का होना, चक्रवर्ती का विजय भंग, 58 श्लाका पुरुष, तीर्थंकर पर उपसर्ग, कल्की व उपकल्की, तीर्थंकरों की पुत्रियाँ आदि।

इस आलेख में चक्रवर्ती का वैभव, चौदह रत्न और नवनिधियों का स्वरूप विनिश्चय आगमोदय के परिप्रेक्ष्य में समेझेंगे। आचार्यश्री विनिश्चयसागरजी महाराज आदिसागर अंकलीकर परम्परा के आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज के शिष्य हैं। आचार्यश्री विनिश्चयसागरजी महाराज ने विनिश्चयागमोदय नामक कृति का सृजन किया है। इस कृति में चारों अनुयोगों के महत्वपूर्ण आयामों को सप्रमाण लिखा है। प्रथामनुयोग अन्तर्गत 63 श्लाका पुरुषों के प्रमुख ज्ञातव्य विषयों का विवेचन है, वहीं सारणियों के माध्यम से उनकी प्रस्तुति सहज ही ग्राह्य बन गयी है। करणानुयोग में कर्मप्रकृति आदि का, चरणानुयोग में श्रमणाचार और श्रावकाचार और द्रव्यानुयोग में षड्द्रव्यों का समीचीन विवेचन है। यह आलेख उक्त कृति के परिप्रेक्ष्य में तैयार किया गया है।

**चक्रवर्ती –** चक्रवर्ती शब्द की व्युत्पत्ति है – चक्रं – कृ+घञर्थे कः। क्रियते अनेन इति। व्रजः समूहः सैन्यम् रथाङ्गम् वा। चक्रवर्ती इति चक्रं पद्माकारशुभचिह्नं करे वर्तते यस्य। वृत्+णिनिः। यद् वा चक्रं पृथ्वीचक्रं तेन वर्तते इति। सर्वभूमेरीश्वरः सार्व्वभौमः वा। सम्पूर्ण भूमि अधिपति ईश्वर चक्रवर्ती होता है। जैन दर्शन में चक्रवती 63 श्लाका पुरुषों के अंतर्गत समाहित है।

चक्ररत्न का स्वामी । यह षट्खंडाधिपति, दिग्विजयी, बत्तीस हजार राजाओं का अधिराज, शंख, अंकुश आदि चक्री के लक्षणों से चिह्नित, चौदह महारत्नों का स्वामी, नवनिधिधारी, सुकृती और दस प्रकार के भोगों से संपन्न होता है । यह भरत, ऐरावत और विदेह इन तीन क्षेत्रों में होता है ।[3]

वर्तमान काल के बारह चक्रवर्ती ये हैं— भरत, सगर, मघवा, सनत्कुमार, शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरनाथ, सुभूम, महापद्म, हरिषेण, जय और ब्रह्मदत्त ।[4]

भविष्य मे जो बारह चक्रवर्ती होंगे उनके नाम इस प्रकार हैं— भरत, दीर्घदंत, जंमदंत (मुक्तदंत) गूढ़दत्त (गूढ़दंत) श्रीषेण, श्रीभूति, श्रीकांत, पद्म, महापद्म, चित्रवाहन (विचित्रवाहन) विमलवाहन और अरिष्टसेन ।[5]

एक समय में यह एक ही होता है । एक चक्रवर्ती दूसरे चक्रवती को, एक नारायण दूसरे नारायण को, एक बलभद्र दूसरे बलभद्र को और एक तीर्थंकर दूसरे तीर्थंकर को देख नहीं पाते ।[6]

---

[3] महापुराण 2.117,6. 194-204, 23.60, हरिवंशपुराण - 1.19
[4] पद्मपुराण - 5.222-224, हरिवंशपुराण 60,286-287,298
[5] महापुराण 76.4852-484, हरिवंशपुराण - 60.563-565
[6] पांडवपुराण 22.10-11

63 शलाका पुरुषों में 12 चक्रवर्ती भी सम्मिलित हैं। जो छह खण्ड रूप भरत क्षेत्र का स्वामी हो बत्तीस हजार मुकुटबद्ध राजाओं का तेजस्वी अधिपति हो वह सकल चक्रवर्ती होता है।

एक चकव्रती की 96,000 रानियाँ (आर्यखण्ड-32,000, विद्याधर-32000, म्लेच्छ-32,000) और 1 पटरानी, 14 रत्न, 9 निधि आदि अनेक विभूतियाँ होती है।

आयुधशाला में चक्र की उत्पत्ति हो जाने पर चक्रवर्ती जिनेन्द्र पूजन पूर्वक दिग्विजय के लिए प्रयाण करता है। पहले पूर्व दिशा की ओर जाकर गंगा के किनारे-किनारे उपसमुद्र पर्यंत जाता है। रथ पर चढ़कर 12 योजन पर्यन्त समुद्र तट पर प्रवेश करके वहाँ से अमोघ नामा बाण फेंकता है जिसे देखकर मागध देव चक्रवर्ती की अधीनता स्वीकार कर लेता हैं। यहाँ से जम्बूद्वीप की वेदी के साथ-साथ उसके वैजयंत नामा दक्षिण द्वार पर पहुँचकर पूर्व की भाँति ही वहाँ रहने वाले वरतनुदेव को वश करता है। यहाँ से वह पश्चिम दिशा की ओर जाता है और सिन्धु नदी के द्वार पर स्थित प्रभासदेव को पूर्ववत् ही वश करता है। तत्पश्चात् नदी के तट से उत्तर मुख होकर विजयार्ध पर्वत तक जाता है और पर्वत के रक्षक वैताढ्य नामा देव को वश करता है। तब सेनापति दण्ड रत्न से उस पर्वत की खण्डप्रपात नामक पश्चिम गुफा को खोलता है। गुफा में से गर्म हवा निकलने के कारण वह पश्चिम के म्लेच्छ राजाओं को वश करने के लिए चला जाता है। छह महीने में उन्हें वश करके जब वह अपने कटक में लौट आता है तब तक उस गुफा की वायु भी शुद्ध हो चुकती है। अब सर्व सैन्य को साथ लेकर वह गुफा में प्रवेश करता है और काकिणी रत्न से अंधकार को दूर कर स्थपति रत्न से गुफा में स्थित उन्मग्नजला नदी पर पुल बाँधता है जिसके द्वारा सर्व सैन्य गुफा से पार हो जाती है। यहाँ पर सेना को ठहराकर पहले सेनापति पश्चिम खण्ड के म्लेच्छ राजाओं को जीतता है तत्पश्चात् हिमवान् पर्वत पर स्थित हिमवान देव से युद्ध करता है। देव के द्वारा अतिघोर वृष्टि की जाने पर छत्र रत्न व चर्म रत्न से सैन्य की रक्षा करता हुआ उस देव को भी जीत लेता है। अब वृषभगिरि पर्वत के निकट आकर दण्डरत्न द्वारा अन्य चक्रवर्ती का नाम मिटाकर वहाँ अपना नाम लिखता है। यहाँ से पुनः पूर्व में गंगा नदी के तट पर आता है, जहाँ पूर्ववत् सेनापति दण्ड रत्न द्वारा तमिस्र गुफा के द्वार को खोलकर छह महीने में पूर्वखण्ड के म्लेच्छ राजाओं को जीतता है। विजयार्ध की उत्तर श्रेणी के 60 विद्याधरों को जीतने के पश्चात् पूर्ववत् गुफा द्वार से पर्वत को पार करता हैं। यहाँ से पूर्व खण्ड के म्लेच्छ राजाओं को छह महीने में जीतकर पुनः कटक में लौट आता हैं। इस प्रकार छह खण्डों को जीतकर अपनी राजधानी में लौट आता है।

**चक्रवर्ती का वैभव –** चक्रवर्ती का शरीर वज्रवृषभनाराज संहनन से सहित सम्पूर्ण लक्षणों से युक्त और समचतुरस्रसंस्थान से समन्वित होता है।

- प्रत्येक चक्रवर्ती के मन को हरण करने वाली और अभिनव लावण्य रूप रेखा वाली 96,000 रानियाँ होती है। उनमें से 32,000 राजकन्याएँ, 32,000 विद्याधर राजाओं की कन्याएँ 32,000 म्लेच्छ कन्याएँ होती हैं। एवं एक पट्टरानी होती है।
- प्रत्येक चक्रवर्ती के संख्यात हजार पुत्र पुत्रियाँ होती हैं और 32,000 गणबद्ध नामक देव उनके अङ्गरक्षक होते हैं ।
- 360 वैद्य एवं 360 रसोइए होते हैं ।
- चौदह रत्न होते हैं, जिनमें 7 सचेतन और 7 अचेतन होते हैं। इनमें से अश्व, गज, गृहपति, स्थपति, सेनापति, स्त्री, पुरोहित सचेतन रत्न हैं और छत्र, असि, दण्ड, चक्र, काकिणी, चिंतामणि, चर्म ये सात अचेतन रत्न हैं।
- नव निधियाँ होती हैं । काल, महाकाल, पाण्डु, माणव, शंख, पद्म, नैसर्प, पिंगल और नानारत्न – ये यथायोग्य वस्तुएं प्रदान करती है।
- चौबीस दक्षिण/मुखावर्त, धवल एवं उत्तम शंख होते हैं।
- एक कोडाकोडी हल होते हैं।
- छह खण्ड रूप पृथिवी होती है।
- चँवरों को 32 यक्ष ढुराया करते हैं तथा एक यक्ष के बन्धु कुल का प्रमाण साढ़े तीन करोड़ होता है ।
- तीन करोड़ गाय तथा एक करोड़ थालियाँ ।
- 18 करोड़ घोड़े, 84 लाख हाथी, 84 लाख रथ, 84 लाख योद्धा, कई करोड़ विद्याधर, 88 हजार म्लेच्छ राजा, चौरासी करोड़ उत्तम वीर होते हैं।
- 32,000 नाट्य शालाएँ एवं 32,000 संगीत शालाएँ भी होती हैं ।
- 12 योजन तक सुनाई देने वाले 12 भेरी (नगाड़े), 12पटह (वाद्ययन्त्र) होते हैं।
- चक्रवर्ती 1. दिव्यपुर, 2 . रत्न, 3. निधि, 4. सैन्य, 5. भाजन, 6. भोजन, 7. शय्या, 8. आसन, 9. वाहन और 10. नाट्य ये दशाङ्ग भोग भोगते हैं ।[7]
- 96 करोड़ गाँव, पचहत्तर हजार नगर, 16 हजार खेट, 24 हजार कर्वट, 4 हजार मंटब, 48 हजार पत्तन, 99 हजार द्रोणमुख, 14 हजार संवाहन, 56 अन्तर्द्वीप, सात सौ कुक्षिनिवास, 28 हजार दुर्ग होते हैं।

**चक्रवर्ती का वैभव की सारिणी –**

| क्र. | वैभव का नाम | विशेषता / प्रमाण |
|---|---|---|

[7] • ( ति .प., 4/1383-1409)

| | | |
|---|---|---|
| 1 | शरीर-संहनन | वज्रवृषभनाराच संहनन |
| 2 | स्वर्ण वर्ण | शरीर सदृश |
| 3 | शरीर-आकार | समचतुरस्रसंस्थान |
| 4 | रानियाँ | 96,000 |
| 5 | पटरानी | 1 |
| 6 | पुत्र-पुत्रियाँ | संख्यात हजार |
| 7 | गणबद्ध नामक अंगरक्षक देव | 32,000 |
| 8 | वैद्य | 360 |
| 9 | रसोईया | 360 |
| 10 | उत्तमरत्न | 14 |
| 11 | चामर ढोरने वाले यक्ष | 32 |
| 12 | प्रत्येक यक्ष के बन्धु-कुल | 3,50,00,000 |
| 13 | निधियाँ | 9 |
| 14 | शङ्ख | 24 |
| 15 | हल | 1 लाख करोड़ |
| 16 | पृथिवी | 6 खण्ड |
| 17 | भेरी | 12 |
| 18 | पटह | 12 |
| 19 | गायें | 3 करोड़ |
| 20 | थालियाँ | 1 करोड़ |
| 21 | भद्रहाथी | 84 लाख |
| 22 | रथ | 84 लाख |
| 23 | घोड़े | 18 करोड़ |
| 24 | वीर (योद्धा) | 84 करोड़ |
| 25 | विद्याधर | अनेक करोड़ |
| 26 | म्लेच्छ राजा | 88,000 |
| 27 | मुकुटबद्ध राजा | 32,000 |
| 28 | नाट्यशालाएँ | 32,000 |
| 29 | संगीतशालाएँ | 32,000 |
| 30 | पदातिक | 48 करोड़ |
| 31 | देश | 32,000 |
| 32 | ग्राम | 96 करोड़ |
| 33 | नगर | 75,000 |
| 34 | खेड़े (खेट) | 16,000 |

| | | |
|---|---|---|
| 35 | कर्वट | 24,000 |
| 36 | मटंब | 4,000 |
| 37 | पट्टन | 48,000 |
| 38 | द्रोणमुख | 99,000 |
| 39 | संवाहन | 14,000 |
| 40 | अन्तर्दीप | 56 |
| 41 | कुक्षिनिवास | 700 |
| 42 | दुर्ग व वनादि | 28,000 |
| 43 | दिव्य भोग | 10 प्रकार |

**प्रमाण – यह विषय का प्रमाण आचार्य यतिवृषभ प्रणीत तिलोयपण्णत्ति ग्रंथ के चतुर्थाधिकार की गाथा संख्या 1381 से 1409 तक से लिया गया है।**

## नौ निधियाँ –

| क्र. सं. | निधियों के नाम | उत्पत्ति स्थान | प्रकारान्तर से उत्पत्ति स्थान | क्या प्रदान करती है ? |
|---|---|---|---|---|
| 1 | काल | श्रीपुर | नदीमुख | ऋतु के अनुसार द्रव्य (फल, पुष्प आदि) |
| 2 | महाकाल | श्रीपुर | नदीमुख | भाजन (बर्तन एवं धातुएँ) |
| 3 | पाण्डु | श्रीपुर | नदीमुख | धान्य (अनाज एवं षट्रस) |
| 4 | मानव | श्रीपुर | नदीमुख | आयुध (अनेक शस्त्र) |
| 5 | शङ्ख | श्रीपुर | नदीमुख | वादित्र (बाजे) |
| 6 | पद्म | श्रीपुर | नदीमुख | वस्त्र (कपड़े) |
| 7 | नैसर्प | श्रीपुर | नदीमुख | हर्म्य (महल एवं प्रासाद आदि) |
| 8 | पिङ्गल | श्रीपुर | नदीमुख | आभरण (गहनें) |
| 9 | नानारत्न | श्रीपुर | नदीमुख | रत्नसमूह (अनेक प्रकार के रत्न) |

प्रमाण – यह विषय आचार्य यतिवृषभ प्रणीत तिलोयपण्णत्ति के चतुर्थाधिकार की गाथा संख्या 1396, 1397, 1398 से ली गई है।

## चक्रवर्तियों के 14 रत्नों का परिचय –

| क्र. | नाम | क्या है ? | संज्ञा नाम | जीव या | उत्पत्ति | कार्य |
|---|---|---|---|---|---|---|

| सं. | | | | अजीव | स्थान | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | अश्व | घोड़ा | पवनञ्जय | जीव | विजयार्ध पर | गुफा द्वार खुल जाने पर तुरग रत्न द्वारा 12 यो क्षेत्र को लांघना। |
| 2 | गज | हाथी | विजयगिरि | जीव | विजयार्ध पर | सवारी करना। |
| 3 | गृहपति | भण्डारी | भद्रमुख | जीव | स्वनगर में | भण्डार आदि की सम्हाल करना। |
| 4 | स्थपति | बढ़ई | कामवृष्टि | जीव | स्वनगर में | उन्मग्ना-निमग्ना नदियों पर पुल बनाना |
| 5 | सेनापति | सेनाध्यक्ष | अयोध्य | जीव | स्वनगर में | गुफाओं के द्वार खोलना एवं सेना संचालन । |
| 6 | पुरोहित | धर्मप्रेरक | बुद्धिसमुद्र | जीव | स्वनगर में | धार्मिक अनुष्ठान कराना। |
| 7 | युवती | पट्टरानी | सुभद्रा | जीव | विजयार्ध पर | उपभोग का साधन। |
| 8 | चक्र | आयुध | सुदर्शन | अजीव | आयुधशाला | छह खण्ड विजय का प्रेरक साधन । |
| 9 | छत्र | छतरी | सूर्यप्रभ | अजीव | आयुधशाला | वर्षा से कटक की रक्षा करना। |
| 10 | असि | आयुध | भूतमुख | अजीव | आयुधशाला | शत्रु संहार। |
| 11 | दण्ड | अस्त्र | प्रचण्डवेग | अजीव | आयुधशाला | गुफाओं के कपाट खोलना एवं वृषभाचल पर प्रशस्ति लिखना। |
| 12 | काकिणी | अस्त्र | चिन्ताजननी | अजीव | श्रीगृह | दोनों गुफाओं में प्रकाश करना। |
| 13 | चिन्तामणी | रत्न | चूड़ामणि | अजीव | श्रीगृह | मनोवांछित कार्य सिद्धि करना। |
| 14 | चर्मरत्न | तम्बू | मज्झमय | अजीव | श्रीगृह | गंगादि नदियों के जल से कटक की रक्षा करना। |

**प्रमाण** – यह विषय आचार्य यतिवृषभ प्रणीत तिलोयपण्णत्ति के चतुर्थाधिकार की गाथासंख्या 1388-1393 तक से लिया गया है।